भारत स्वाभिमान-सामान्य प्रश्नोत्तर

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने जब से राजनैतिक शुद्धिकरण के अभियान का शंखनाद किया है एक राष्ट्रव्यापी बहस शुरू हो गई है। यह एक शुभ लक्षण है, प्रश्न से समाधान अथवा तर्क से निर्णय तक पहुँचने का। विगत 18 से 20 वर्ष के सामाजिक जीवन में श्रद्धेय स्वामीजी महाराज ने लगभग 3 करोड़ लोगों को योग एवं राष्ट्रप्रेम की दीक्षा में दीक्षित किया तथा इन 3 करोड़ लोगों के साथ जुड़े लगभग 30 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रूप से तथा टी.वी.व अन्य मीडिया के माध्यम से 100 करोड़ से अधिक लोगों तक श्रद्धेय स्वामीजी महाराज के संदेश पहुँचे हैं। रामनवमी 2009 से रामनवमी 2010 तक लगभग 2 लाख लोगों को श्रद्धेय स्वामीजी महाराज ने 'भारत स्वाभिमान' के राष्ट्रनिर्माण के कार्य हेतु दीक्षित किया और अब सम्पूर्ण देश में भारत स्वाभिमान व पतंजलि योग समितियों की बैठक करके विक्रम संवत 2067 के नववर्ष पर नये भारत के निर्माण की दिल्ली की ऐतिहासिक पत्रकार वार्ता में घोषणा की है।

भारत स्वाभिमान आंदोलन के इस व्यवस्था परिवर्तन के ऐलान से जहां करोड़ों देशवासियों के हृदय में एक नयी उम्मीद जगी है। वहीं सत्ता के शिखर पर बैठे या बैठने की जुगाड़ में लगे कुछ लोगों की यह अभियान, चिंता बढ़ा रहा है। इस पूरे आंदोलन को लेकर राष्ट्रव्यापी बहस के दौरान देश के शीर्ष पत्रकारों द्वारा जो मुख्य प्रश्न सामने आए उनके संक्षिप्त समाधान पूज्य स्वामीजी की भाषा में यहां संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न: बाबा सत्ताओं के शिखर पर बैठी इन शक्तियों से आपको डर नहीं लगता?

उत्तर: मैंने स्वयं देश के लगभग 115 करोड़ भारतीयों के सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि, सम्मान के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। अब देश को यदि मेरी आवश्यकता होगी तो 115 करोड़ लोग मेरी रक्षा में खड़े होंगे। पतंजलि योगपीठ व आयुर्वेद की सेवा का यह मिशन भी आज करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र बन चुका है। इसका कोई बाल बांका नहीं कर सकता।

प्रश्न: आप मुनष्य को कौन सी चेतना या दुनियाँ में ले जाना चाहते हैं?

उत्तर: मनुष्य की चेतना, चरित्र, आचरण, ज्ञान या जीवन के चार स्तर हैं। असुरत्व, मनुष्यत्व, देवत्व और अति दैवी चेतना या जीवन मुक्त अवस्था। हम निम्न चेतना से उसे दैवी चेतना की ओर ले जाना चाहते हैं और यही हम सबकी आत्मा की पुकार है।

प्रश्न: आप श्रद्धा के शिखर पर बैठे हैं। अपना सब कुछ दाँव पर लगाना क्या समझदारी है?

उत्तर: मेरे अपने सम्मान, सुरक्षा, यश व प्रतिष्ठा आदि से मेरे राष्ट्र की सुरक्षा, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा व राष्ट्र का गौरव अधिक महत्वपूर्ण है। इस तन पर मुझसे पहले इस वतन का अधिकार है।

प्रश्न: व्यक्तिवादी सोच में सोये व खोये हुए व्यक्ति को जो हर बात में देश, समाज से मुझे क्या लेना-देना की रट लगा रहा है, कैसे जगायेंगे उसे?

उत्तर: हम योग से उसकी चेतना या मैं का विस्तार करेंगे और वह व्यक्तिवादी चिन्तन से राष्ट्रवादी, मानवतावादी, अध्यात्मवादी व विकासवादी सोच को अवश्य स्वीकार करेगा।

प्रश्न: आपकी दोहरी भूमिका से बहुत से सवाल पैदा हो रहे हैं, क्या कहेंगे आप?

उत्तर: दोहरी भूमिका, जवाबदेही या जिम्मेदारी बहुत बड़े साहस का काम है। यदि मैं योगी व राजयोगी, योगगुरु व राजगुरु की भूमिका को ईमानदारी व जिम्मेदारी से निभाता हूँ तो इसमें प्रश्न का कोई स्थान है ही नहीं। प्रश्न दोहरी जिम्मेदारी पर नहीं, दोहरे चरित्र पर खड़े होते हैं।

प्रश्न: स्वामीजी राजनीति बहुत गंदी हो चुकी है। इसमें क्यों हाथ डाल रहे हैं?

उत्तर: गंदगी को साफ करने के लिए उसमें हाथ तो डालना ही पड़ेगा। मात्र मूक दर्शक बनकर बैठने से बात नहीं बनेगी।

प्रश्न: राजनीति में जिम्मेदार व ईमानदार लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है।

उत्तर: या तो देश के संविधान व चुनाव आयोग की आदर्श आचार संहिता में संशोधन कर दो और लिख दो कि चुनाव में लड़ने का अधिकार केवल भ्रष्ट व बेईमान व गैर जिम्मेदार, अपराधी लोगों को ही है और सत्ता में सत्य का स्थान नहीं है। यदि यह नहीं हो सकता तो फिर राजनीति में स्थान केवल ईमानदार व जिम्मेदार लोगों को ही होना चाहिए। हम हमारा यह मिशन अवश्य पूरा करेंगे।

प्रश्न: एक संन्यासी का ये राजनैतिक शुद्धिकरण का अभियान कितना उचित है?

उत्तर: महर्षि स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानन्द व श्री अरविन्द जैसे सब महान सन्त एक स्वर से कहते हैं- सत्ता, सम्पत्ति व व्यवस्थाओं पर ईमानदार, जिम्मेदार व सात्विक लोगों का ही अधिकार होना चाहिए। गलत लोगों की हाथों में सत्ता, शक्ति व सम्पत्ति होने पर सदा उसका दुरूपयोग हुआ है। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-'हे अर्जुन! इस त्रिलोक में मेरे लिए कुछ पाना या करना शेष नहीं है फिर भी मैं अपना दायित्व निभा रहा हूँ। सत्य की प्रतिष्ठापना, सज्जनों की रक्षा व दुष्टों का विनाश यह मेरा धर्म है। अत: यदि संन्यासी ही शुद्धिकरण नहीं करेंगे तो और करेगा कौन?

प्रश्न: बहुत से साधु, संन्यासी व बाबा आपकी इस पहल की आलोचना भी कर रहे हैं, क्या कहेंगे?

उत्तर: न किसी की आलोचना, न अपनी किसी से तुलना। वर्तमान में भी सभी राष्ट्रवादी व अध्यात्मवादी सन्त पूरी तरह हमारे साथ हैं। हम सब सन्तों का सम्मान करते हैं। परन्तु देश, धर्म व अध्यात्म के बारे में हम अपना आदर्श महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद व श्री अरविन्द आदि महापुरुषों को ही मानते हैं। सन्तों के अलावा शहीदे आजम भगत सिंह, आजाद, बिस्मिल व पूज्य बापू आदि भी हमारे

आदर्श पुरुष हैं।

प्रश्नः बहुत से आपके प्रशंसक, आलोचक, बुद्धिजीवी व प्रबुद्ध लेखकों का प्रश्न है कि ईमानदार आदमी स्वामीजी कहाँ से लायेंगे?

उत्तरः हमारे देश में 99% लोग ईमानदार ही हैं। कुटिल तन्त्र, भ्रष्ट व्यवस्था व भ्रष्टाचार ने आम आदमी को बेईमान बनने के लिए मजबूर किया हुआ है। अतः कमी ईमानदार लोगों की है ही नहीं। अव्वल दर्जे के बेईमान तो मात्र 1% लोग ही हैं। इन्होंने पूरे देश के 99% लोगों के जीवन को व राष्ट्र को नर्क बनाया हुआ है। इन्हीं को बेनकाब करना है।

प्रश्नः क्या आप सफल हो पायेंगे? बहुत चुनौतियों, संकट और हर कदम पर समस्याएं हैं।

उत्तरः जब मैं घर से योगी बनने के लिए निकला था तब अकेला था। न मेरे साथ कोई उपनाम था न धन का आश्रय, न राजाश्रय था। जाति व मजहब को मैंने आगे बढ़ने के लिए सीढ़ी नहीं बनाया था। सत्य, ईमानदारी, संकल्प व आत्मबल के साथ मैं आगे बढ़ा। अपने कर्म को अपना धर्म मानकर निःस्वार्थ भाव से मानव मात्र की सेवा की और करोड़ों लोगों का मैंने सेवा व सत्य से विश्वास अर्जित किया। आज जब मैं इस नए आंदोलन के द्वारा भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने निकला हूँ, अब तो करोड़ों लोग मेरे साथ हैं। वो मेरे हाथ हैं। अब तो असफलता का प्रश्न ही नहीं है। भगवान श्री राम व योगेश्वर जब रावण व कंसादि असुरों से युद्ध कर रहे थे तो किसी ने भी उनके विजय की कल्पना नहीं की थी, परन्तु अन्ततः सत्य विजयी हुआ। जिन अंग्रेजों के साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था, उनको परास्त करने की बात भी कोई नहीं सोच सकता था लेकिन क्रान्तिकारियों के प्रचण्ड आंदोलन व बापू के सत्याग्रह व आंदोलनों ने अंग्रेजों की पराधीनता से देश को मुक्त कराया। इस आंदोलन में भी ऐसा ही होगा असुरत्व पराजित होगा तथा देवत्व विजयी होगा।

प्रश्नः राजनीति विशुद्ध रूप से वोटों का खेल बन चुकी है और भ्रष्ट व कुटिल राजनीतिक नेताओं ने देश की जनता या वोटों को जाति, मजहब, प्रान्त व भाषाओं में बांट दिया है। ऐसे में क्या करेंगे आप?

उत्तरः देशभर में 50 से 60% जो लोग इसलिए वोट नहीं करते थे कि किसको वोट करें? सभी भ्रष्ट हैं, कोई कम कोई ज्यादा। हम उनको अपने साथ जोड़ेंगे तथा भ्रष्टाचार व गरीबी मुक्त भारत बनाने के संकल्प के साथ एक जिले में हम 5 से 10 लाख 'भारत स्वाभिमान' के सदस्य बना रहे हैं तथा इनको रोग व नशा मुक्त करके आत्मनिर्माण व राष्ट्र निर्माण के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। ये सदस्य हमारे मूल वोट बैंक होंगे जिसमें सब जाति, मजहब, प्रान्त व भाषा-भाषी सम्मिलित होंगे। जाति, प्रान्त, मजहब व अन्य सब संकीर्णता की दीवारों से परे जाकर देशवासियों ने मुझसे प्रेम किया है। देश के लोगों के सामने आदर्श विकल्प नहीं था। हम एक सशक्त व श्रेष्ठ विकल्प देंगे। देश सदा

ही राम व कृष्ण अर्थात् सत्य के साथ बड़ा हुआ है। रावण, कंस अथवा झूठ के साथ नहीं। हर इंसान की आत्मा के भीतर सत्य की पुकार है। उसके सामने जब दो विकल्प होते हैं तो वह सत्य, ईमानदारी, सदाचार, संस्कृति, धर्म व अध्यात्म को ही चुनता है या स्वीकार करता है।

प्रश्न: टाइम्स यू.के. एक वरिष्ठ विदेशी पत्रकार ने पूछा कि 1991 से पहले तो भारत पूर्णत: स्वदेशी के रास्ते पर था तब विकास क्यों नहीं हुआ?

उत्तर: एक तो सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आजादी की पूर्व संध्या से पहले तो ट्रांसफर ऑफ पावर एग्रीमेंट का षड्यंत्र व उसके बाद अंग्रेजी सरकार की तरह ही लोकतन्त्र को लूटतन्त्र का रूप दे दिया गया। बस अन्तर केवल इतना था कि पहले तो विदेशी लोग लूटते थे, अब अपने ही वतन के अंग्रेजों के मानस पुत्र देश को लूटने लगे। अर्थात् भ्रष्टाचार देश के विकास की सबसे बड़ी बाधा बना है। विकास का 80 से 90% धन व संसाधन शासकों ने हेराफेरी करके लूटा तथा उस समय तक भारत में तकनीकी प्रतिभा, पूंजी व अन्य पेशेवर लोगों की कमी थी। आज तो मानव संसाधन, प्रतिभा, पूंजी व तकनीकी आदि किसी भी बात की हमारे यहाँ कमी नहीं है। अत: प्रथम हम भारत को स्वदेशी से स्वावलम्बी बनायेंगे और बाद में जब भारत समृद्ध बन जायेगा तो विश्व की पूंजी भी हमारी ताकत बनेगी, कमजोरी नहीं। विदेशी पूंजी निवेश गरीब देश को और अधिक गरीब बनाता है तथा ताकतवर देश को और अधिक शक्तिशाली बनाता है।

प्रश्न: पूरे विश्व में वैश्वीकरण व उदारीकरण की बात हो रही है, आप स्वदेशीकरण की बात कर रहे हैं। तर्क, विज्ञान व विकास की दृष्टि में आपका पक्ष कितना सबल है?

उत्तर: मैं तकनीकी का विरोधी नहीं हूँ। मैं अपने देश की पूंजी, प्रतिभा व विश्व की उच्चतम एवं आधुनिकतम तकनीकी का प्रयोग करके देश का उत्पादन बढ़ाकर, निर्यात बढ़ाकर इस वैश्वीकरण व उदारीकरण को अपनी ताकत बनाना चाहता हूँ। इस उदारीकरण व वैश्वीकरण को हम अपनी कमजोरी नहीं बनाना चाहते। अपने देश की लगभग 300 लाख करोड़ की पूंजी जो विदेशी बैंकों व देश में काले धन के रूप में जमा है वह यदि विकास में लगती है तो विदेशी पूंजी निवेश की आवश्यकता कहां है हमें। विदेशी कंपनियों को भी हमारे ही देश के लोग चलाते हैं तो देश में प्रतिभा की भी कमी नहीं और तकनीकी जहां से भी हमें मिले उसका मूल्य चुकाकर उसे लेना ही चाहिए। एक वास्तविकता और भी है कि आज पूरे विश्व में अमेरिका के नासा के वैज्ञानिक, वहाँ के डॉक्टर्स, आई.टी. इंजीनियर्स से लेकर होटलादि उद्योगों में 30% से अधिक विशुद्ध रूप से भारतीयों का ही योगदान है।

प्रश्न: क्या आप वोट के लिए ही काम करेंगे?

उत्तर: वोट का काम तो 5 वर्षों में एक दिन होता है। हमारे आंदोलन का मुख्य ध्येय रोग, नशा व अन्य सामाजिक बुराईयों से मुक्त सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत समाज का निर्माण करना है और देश की सत्ता, सम्पत्ति, संसाधनों व व्यवस्थाओं पर जब सत्य का साम्राज्य होगा तो देश में गरीबी, भूख, अभाव, अशिक्षा, बेरोजगारी व नक्सलवाद आदि समस्याएं खत्म होंगी तथा मूलभूत विकास का समस्त ढांचा खड़ा होने से पूरा देश सर्वांगीण रूप से विकसित होगा तथा विश्व की महाशक्ति के रूप में भारत का उदय होगा।

प्रश्न: राजनीति शब्द से लोगों को घृणा क्यों हुई? हर गलत कार्य के लिए लोग कहते हुए नजर आते हैं कि भाई राजनीति मत करो। यह बहुत राजनीति करता है। हर गलत कार्य को राजनीति क्यों कहा जाने लगा है?

उत्तर: राजनेताओं के गलत आचरण से राजनीति शब्द बदनाम हुआ है।

प्रश्न: आपका ध्येय बहुत पवित्र होने के बावजूद विरोध के स्वर क्यों उठते हैं?

उत्तर: मैं विरोध का मुख्य तीन कारण मानता हूँ। एक मुठ्ठी भर चन्द, भ्रष्ट, बेईमानी व कुटिल राजनेता जिनका देश की सत्ता, सम्पत्ति एवं सम्पूर्ण संसाधनों पर निरंकुश एकाधिकार व पूरा नियन्त्रण है तथा कानून की असीम शक्ति जिनके पास है और उन्होंने यह मान लिया है कि इस पर तो उनका ही एकमात्र अधिकार है। ये सब उनको छिनता हुआ दिखता है, तो वे सब बुरी तरह घायल नाग की तरह पगला कर विरोध कर रहे हैं। देश की 99% से भी अधिक जनता हमारे साथ है।

दूसरा बहुराष्ट्रीय कंपनियां तथा कुछ दुनियाँ के ताकतवर देश जो भारत को दुनियाँ का सबसे बड़े बाजार के रूप में देखते हैं और भारत के कुछ भ्रष्ट नेता जो इन विदेशी कंपनियों के एजेन्ट की तरह कार्य कर रहे हैं वे सब अपने-अपने स्वार्थों के कारण केवल विरोध ही नहीं अपितु बड़ा षड्यन्त्र या साजिश भी कर सकते हैं।

तीसरा कुछ लोग विरोध नहीं कर रहे हैं, वे डरे सहमे हुए हैं। उनके मन में एक काल्पनिक निराशा व अविश्वास के कारण बैठा हुआ डर है कि ये कुछ भ्रष्ट नेता नीचता या गिरावट की किसी भी हद तक जाकर हमारे स्वामीजी को या उनके जीवन के अस्तित्व को खत्म कर सकते हैं। इसलिए वे श्रद्धा, विश्वास व प्रेम की डोर में बंधे हुए कह रहे हैं कि बाबा राजनीति बहुत गंदी है। इसको साफ करने का जोखिम मत उठाओ-जैसे हमारे हितचिन्तक, माता-पिता, गुरुजन या हमारे प्रियजन हमें कभी भी जोखिम या खतरे के बीच नहीं देखना चाहते लेकिन इस देवासुर संग्राम में लड़ना व विजयी होने को मैं अपना दायित्व, कर्त्तव्य व धर्म मानता हूँ। मेरे लिए योगधर्म व राष्ट्रधर्म दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण ही नहीं अपितु सब धर्मो में राष्ट्रधर्म सर्वोपरि है तथा हितों में राष्ट्रहित, प्रेम में राष्ट्रप्रेम एवं भक्ति में राष्ट्रभक्ति सर्वोपरि है।